IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 10, October 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 10, October 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1110089|

हिन्दी साहित्य में नारी स्वतंत्रता

संगीता रोहिला

सहायक आचार्य–हिन्दी

चूरू बालिका महाविद्यालय

चूरू (राजस्थान)

सारांश

स्वतंत्रता शब्द 'स्व' तथा तंत्रता का समासगत रूप है। स्व का अर्थ है कुटुम्ब, आत्मीय जन, सम्बन्धी अपनी जाति या वर्ग का तथा तंत्रता का अर्थ है कोई ऐसा कार्य करना जिससे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति होती है। स्वतंत्रता का अर्थ है, आजादी, बिना किसी बंधन या नियंत्रण के स्वेच्छानुकूल कार्य करने का अधिकार। इस शब्द के साथ जब 'नारी' शब्द जुड़ा तो वो नारी द्वारा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष का प्रतीक बन गया।

नारी के पास वैचारिक और व्यावहारिक स्वतंत्रता होनी चाहिए जब तक इन दोनों स्तर पर वह स्वंतत्र नहीं होती तब तक नारी मुक्ति आंदोलन व्यर्थ है।

किसी भी देश में मानव संसाधन का पचास प्रतिशत महिलाएं होती है। कोई भी देश तब तक प्रगति नहीं कर सकता जब तक वह इस आधी जनसंख्या का पूरा–पूरा उपयोग नहीं करता। विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली देश वही है जहां महिलाओं पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं और सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए उन्हें पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त है। यदि हम अपने समाज को बुराईयों से मुक्त करना चाहते हैं और अर्थव्यवस्था को मजबूत करना चाहते हैं तो हम महिला वर्ग की उपेक्षा नहीं कर सकते क्यों कि प्रतिभा, बौद्धिक क्षमता और आत्मविश्वास में महिलाएं पुरूषों से कदापि कमत्तर नहीं है।

हमारे देश में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए कानून के द्वारा, शिक्षा के माध्यम से विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों के माध्यम से प्रयास किए गए हैं परन्तु अभी और भी बहुत कुछ करना है। यदि हम एक स्वस्थ समाज चाहते हैं, अपनी अर्थव्यवस्था को तीव्र गति से बढ़ाना चाहते हें तो हमें अपने बेटों और बेटियों को समान अधिकार देने होंगे। उनमें परवरिश, शिक्षा, रोजगार के अवसर और स्वस्थ वातावरण प्रदान करने में कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए।

मूल बिन्दु : नारी स्वतंत्रता, कल्याणकारी कार्यक्रमों, आर्थिकता, समानता का अधिकार

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 10, October 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1110089|

परिचय :

नारी की तुलना कच्ची मिट्टी से की जाती है, जो जिस सांचे में ढलती है वैसा ही रूप ले लेती है। ठीक वैसे ही नारी को परिवार और समाज में जैसा वातावरण मिलता है वह वैसी ही बन जाती है। सकारात्मक माहौल मिलने पर उसका रूप परिपक्व और पूर्णता लिए होता है। महिलाओं के लिए समाज के बदलते दृष्टिकोण के चलते ही नारी ने संकीर्ण विचारधारा को त्याग कर अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा कर लिया है और यही आत्मविश्वास उसे हर क्षेत्र में सफलता दिला रहा है। प्रगति का ऐसा कोई शिखर नहीं बचा जहां आज की नारी न पहुंची हो। आज नारी हर क्षेत्र में अपनी कामयाबी का परचम लहरा रही है। उसने समाज के सामने अपनी एक खास पहचान बनाई है, जिसमें वह साहसी, परिपक्व, सहिष्णु और मजबूत इरादे वाली महिला के रूप में उभर कर सामने आई है।

आज के युग में जब सम्बधों का आधार मानवीय भावना की बजाय आर्थिकता बनता जा रहा है, नारी की आर्थिक स्वतंत्रता से आपसी संबंधों में अनेक तनाव जन्म लेने लगे हैं।

दूसरी ओर शिक्षा के माध्यम से अर्जित स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप नारी के कंधो पर ऐसा बोझ भी आ पड़ा है जो पहले नहीं था। समानता और स्वतंत्रता एकांगी नहीं हो सकती। जो व्यक्ति समान अधिकार पाता है उसे समान दायित्व भी निभाने पड़ते हैं। पुरुष के समान स्वतंत्रता ने नारी पर दायित्वों का समान ही नहीं उससे अधिक बोझ डाल दिया है। पुरुष का दायित्व आजीविका अर्जित करना मात्र है जबकि स्त्री जो नौकरी करती है आजीविका अर्जित करने के साथ–साथ गृहस्थी को चलाने की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकती। कानून द्वारा समानाधिकार जरूर मिले लेकिन उसका समाज के प्रति दायित्व और भी बढ़ गया। आर्थिक स्वतंत्रता से उत्पन्न आत्मविश्वास ने उसके पैरो तले पक्की जमीन तो दी है परन्तु पत्नी का परम्परागत स्वरूप उसके लिए बोझ बन रहा है। घर बनाने के कार्य में वह पति को समान योगदान देती है तो उसे निर्णय लेने का अपनी राह चुनने का अधिकार भी चाहिए।

आज के माहौल को देखते हुए हम कह सकते है कि आज भी नारी उस रूप में स्वतंत्र नहीं है जिस रूप में उसे स्वतंत्र होना चाहिए और इन सब में अगर हम कारण देखे तो एक तरफ नारी स्वभाव भी है जो नारी स्वतंत्रता में बाधक है। भारतीय नारी के जीवन में पुरुष होना आवश्यक है। उसके सहारे के बिना स्त्री के अस्तित्व की कल्पना भी कठिन है। यदि भौतिक रूप से वह आत्मनिर्भर भी हो तो भी मानसिक रूप से किसी पुरुष के अस्तित्व से सुरक्षित होना उसकी मानसिकता है, और संस्कारों के कारण बन गया उसका स्वभाव है। आर्थिक मजबूरियों के अतिरिक्त भी कोई मजबूरी है, जो उसे स्वतंत्र नहीं होने देती। भावनात्मक और सामाजिक स्तर पर वह अपने स्वभाव के कारण पति या बच्चों की ज्यादतियों का विरोध नहीं कर पाती।

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 10, October 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1110089|

आधुनिकता के दौर में महिलाओं और पुरुषों को चाहे समानता का अधिकार मिल गया है मगर आज भी दोनों के बीच विचारों के मतभेद ज्यों के त्यों बने हुए हैं। जो दोनों व्यक्तित्व पर गहरा प्रहार करते हैं। महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए सरकार ने कड़े कानून बनाने का जो प्रावधान तैयार किया है, वह समय की मांग है मगर इतना होने पर भी आज जिधर नजर दौड़ाएं, देखने में आता है कि महिलाएं हर जगह पिस रही है। उनकी गरिमा और सुरक्षा सुनिश्चित तो की गई है मगर इसके लिए कोई वचनबद्ध नहीं है। बलात्कार, घरेलु हिंसा, दुष्कर्म, अपहरण और छेड़—छाड़ के बहुत से ऐसे मामले होते हैं जो सामाजिक कलंक की वजह से पुलिस में दर्ज ही नहीं कराये जाते। बहुत से पुरुष आज भी महिलाओं को शारीरिक जरूरत को पूरा करने की निगाह से देखते हैं। समाज में केवल महिला वर्ग ही शालीन और शांत स्वभाव का होना चाहिए। पुरुष वर्ग तो अपनी मनमानी करने के लिए स्वतंत्र था, है और शायद आगे भी रहेगा। इसी कारण घर के बाहर ही नहीं घर के अंदर भी महिलाएं सुरक्षित नहीं है। पिता, भाई जैसे रिश्ते भी आज के समय में तार—तार हो रहें हैं।

नारी हर क्षेत्र में और हर तरह से दयनीय स्थिति में अपना जीवन यापन कर रही है। पाश्चात्य देशों में भी स्त्री मुक्ति आंदोलन चलाया गया, किन्तु वहां के स्त्री मुक्ति आंदोलन और भारत में स्त्री मुक्ति आंदोलन में पर्याप्त अंतर है। पश्चिम की नारी समाज में अपनी प्रतिष्ठा और बराबरी के दर्जे को प्राप्त करने की लड़ाई लड़ रही है जबकि भारतीय नारी पुरुष शोषण से मुक्ति प्राप्त करना चाहती है। बराबरी का दर्जा और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न तो अब भी उसके लिए मृग—मरीचिका है। अन्य देशों की तुलना में भारत की नारियों की पृष्ठभूमि तथा उनकी सामाजिक आर्थिक दशाओं में पर्याप्त अन्तर है। अन्य देशों में नारी उन पशुवत् शोषणों से नहीं गुजरी है जिनका सामना भारतीय नारी आज भी कर रही है। भारतीय नारी अगर आंदोलन कर रही है तो वह अपने आज को इस पशुवत शोषण से मुक्त करना चाहती है किन्तु अन्य देशों की नारी उनसे काफी हद तक ऊँची है और वे अगर आंदोलन कर रही है तो केवल अपनी प्रतिष्ठा के लिए। भारत में रूढ़ियों ने कहीं परम्परा बनाकर और कहीं धर्म का रूप लेकर नारी को बंदिनी बना डाला है। अशिक्षा तथा गरीबी ने उसके जीवन को यातनामय कर रखा है।

भारतीय महिलाओं में क्षमता की कोई कमी नहीं है, लेकिन अशिक्षा एवं पारस्परिक सामाजिक बंधनों में कैद है कि उन्हें अपनी क्षमता का ज्ञान ही नहीं है। लड़कियों को पढ़ाने के मामले में परिजन हालांकि अब कुछ उदार हो रहे हैं, लेकिन अभी भी परिस्थितियां संतोषजनक नहीं है। ऐसे में महिला वर्ग और समाज को उसकी शिक्षा एवं अन्य सुविधाओं के प्रति जागरूक करने की जरूरत है।

इसी जरूरत को समझते हुए हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री—विमर्श का आरम्भ हुआ। महिला रचनाकारों से साहित्य में इस मुद्दे को पुरजोर रूप से उठाया। इन रचनाकारों ने परम्परा से चली आ रही रीति—रिवाज

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 10, October 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1110089|

को सहेजते हुए स्त्री की अस्मिता को बनाए रखने का प्रयास अपनी रचना में किया। उन्होंने नारी में चेतना जाग्रत की कि उनका उद्धार उनके प्रयासों से ही सम्भव हो सकता है।

स्वतंत्रता के बाद महिला लेखिकाओं ने अपने कर्त्तव्य को समझते हुए लेखन कार्य किया और उसके द्वारा स्त्री से जुड़े हुए मुद्दों को उठाया। इन लेखिकाओं में प्रमुख रूप से मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, उषा प्रियम्वदा, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, चित्रा मुदगल, नमिता सिंह, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, राजी सेठ आदि का नाम महत्वपूर्ण है जिन्होंने स्त्री चेतना से जुड़े हुए आयामों को प्रस्तुत किया।

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से तत्कालीन नारी जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत किया **'मैं हार गयी'**, **'आपका बंटी'**, **'यही सच है'** में परिवार और समाज की समस्याओं के प्रति प्रश्न समाज के लोगों के सामने उठाया है।

मृदुला गर्ग ने अपनी **'हरी बिंदी'** कहानी में विवाहित नारी की मानसिक दशाओं का चित्रण किया है वहीं **'कितनी कैद'** में आधुनिक जीवन की यांत्रिकता को उद्घाटित किया है। अपनी कहानी **'एक विवाह'** और **'दुनिया का कायदा'** में नारी के संघर्ष को चित्रित किया है।

उषा प्रियम्वदा के साहित्य में नारी अस्मिता की रक्षा की अभिव्यक्ति हुई हैं **'चाँद जलता रहा'** कहानी में रोहिणी का स्वच्छंद प्रेम, एकाकीपन व निराशा की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है वहीं **'टूटे हुए'** कहानी में अतृप्त मातृत्व के कारण मानसिक रूप से परेशान स्त्री की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी गई है। उषा प्रियम्वदा ने **'छुट्टी का दिन'** कहानी में **'माया'** के माध्यम से कामकाजी महिलाओं की हताशा और विडम्बना को अंकित किया है।

ममता कालिया ने अपनी रचनाओं में नारी की निराशा, कुंठा, पीड़ा को व्यक्त किया है। उनकी **'माँ'** कहानी में सास के अत्याचारों से परेशान नारी का चित्रण है वहीं **'मदिरा'** कहानी में नीरस दाम्पत्य का चित्रण देखने में मिलता है। ममता कालिया की कहानियों में भी अधिकांश नारियां बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्वयं स्वतंत्रता की मांग करती हुई दिखाई देती है। उसकी चेतना परिवार की सीमाओं को लांघना चाहती है।

कृष्णा सोबती के उपन्यास **'कुमारिकाएं'** में अविवाहित लड़कियों की भावनाओं का सुन्दर चित्रण किया गया है। कृष्णा सोबती ने इसमें कहा है ''यदि विवाह अनिवार्य है तो समाज को उसकी व्यवस्था करनी चाहिये और उसके स्वस्थ स्वरूप का विकास करना चाहिए।''

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 10, October 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1110089|

निष्कर्ष :

इस प्रकार स्त्री–विमर्श के अन्तर्गत लेखन करने वाली महिला लेखिकाओं का लेखन नारी के अस्तित्व और अस्मिता का दस्तावेज है, जो आज तक अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए समाज की सच्ची तस्वीर को प्रस्तुत कर नारी के आत्मसम्मान को बचाना एवं बनाए रखने की कहानी बयां करता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. महिला कहानीकार : प्रतिनिधि कहानियां, संपादक– पुष्पलाल सिंह, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली संस्करण 1999
2. भारत में महिला शिक्षा और साक्षरता – सुभाषिणी पालीवाल, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली संस्करण 1998
3. समकालीन महिला लेखन : डॉ0 ओमप्रकाश शर्मा, पूजा प्रकाशन एवं खामा पब्लिशर्स, दिल्ली प्रथम संस्करण 2002
4. स्त्री विमर्श : साहित्यिक और व्यावहारिक संदर्भ, डॉ0 कस्वा उमरे
5. भारतीय नारी : दशा दिशा : आशारानी, व्होरा नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह, राधाकृष्ण, नयी दिल्ली इलाहाबाद, संस्करण 2008

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details